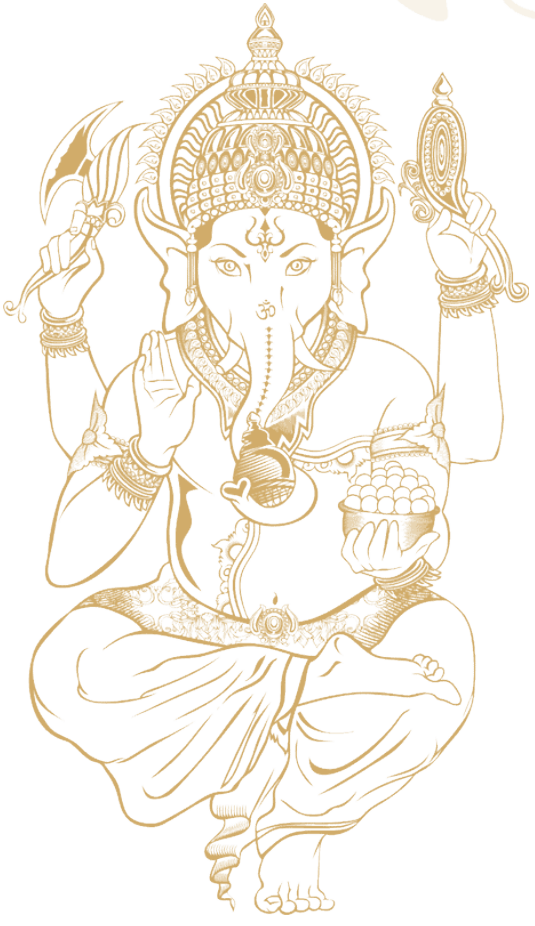

Chitransh Tiwari

08 Nov 2010

12:00 PM

Ayodhya

Model: Web-MyKundli

Order No: 121381701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**08/11/2010**
दिन	सोमवार
जन्म समय	**12:00:00 घंटे**
इष्ट	14:20:53 घटी
स्थान	**Ayodhya**
राज्य	Uttar Pradesh
देश	India

अक्षांश	26:47:00 उत्तर
रेखांश	82:12:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:01:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	11:58:48 घंटे
वेलान्तर	00:16:19 घंटे
साम्पातिक काल	15:08:10 घंटे
सूर्योदय	06:15:38 घंटे
सूर्यास्त	17:14:09 घंटे
दिनमान	10:58:30 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	21:43:53 तुला
लग्न के अंश	10:37:24 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मकर - शनि
राशि-स्वामी	**वृश्चिक - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**ज्येष्ठा - 1**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	अतिगण्ड
करण	तैतिल
गण	राक्षस
योनि	मृग
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	नो-नौनिहाल
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृश्चिक

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1932	कार्तिक	17
पंजाबी	संवत : 2067	कार्तिक	23
बंगाली	सन् : 1417	कार्तिक	22
तमिल	संवत : 2067	आइपसी	23
केरल	कोल्लम : 1186	तुलम	22
नेपाली	संवत : 2067	कार्तिक	23
चैत्रादि	संवत : 2067	कार्तिक	शुक्ल 2
कार्तिकादि	संवत : 2067	कार्तिक	शुक्ल 2

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 2
तिथि समाप्ति काल _____: 06:25:24
जन्म तिथि _____: 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: अनुराधा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 08:28:11 घंटे
जन्म योग _____: ज्येष्ठा
सूर्योदय कालीन योग ____: अतिगण्ड
योग समाप्ति काल _____: 27:53:09 घंटे
जन्म योग _____: अतिगण्ड
सूर्योदय कालीन करण ____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 06:25:24 घंटे
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 08:49:34
भभोग _____: 59:20:26
भोग्य दशा काल _____: बुध 14 वर्ष 5 मा 7 दि

घात चक्र

मास _____: आश्विन
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: रेवती
योग _____: व्यतिपात
करण _____: गर
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: वृश्चिक
सूर्य _____: मकर
चन्द्र _____: वृष
मंगल _____: कुम्भ
बुध _____: वृश्चिक
गुरु _____: मीन
शुक्र _____: मेष
शनि _____: कर्क
राहु _____: वृष

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

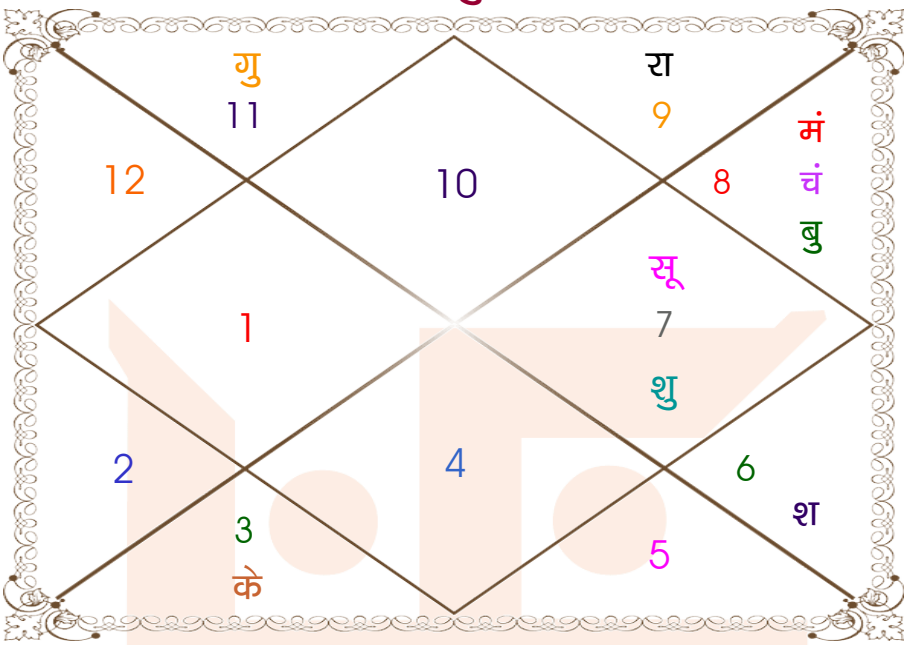

चन्द्र कुंडली

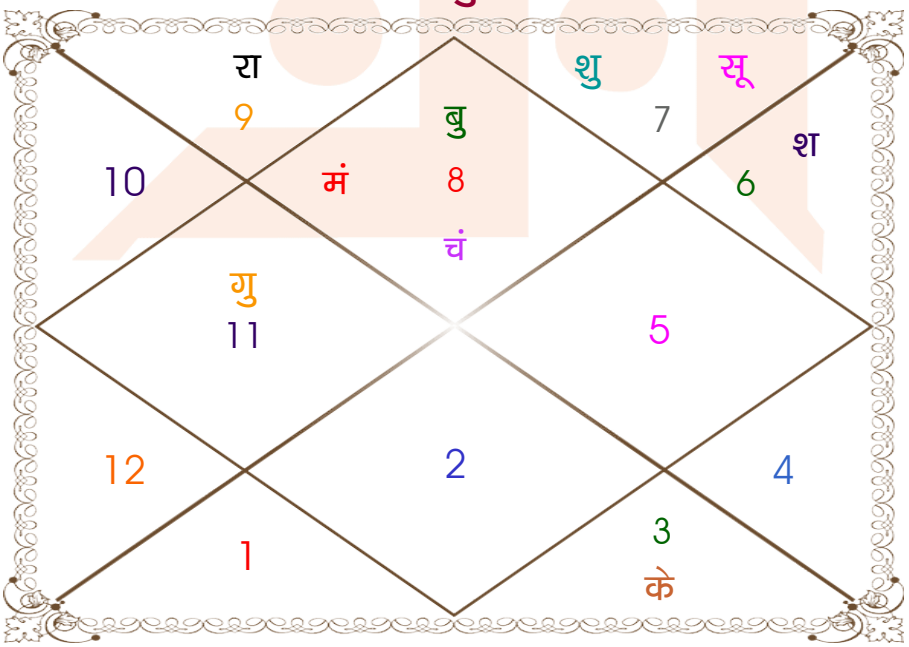

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

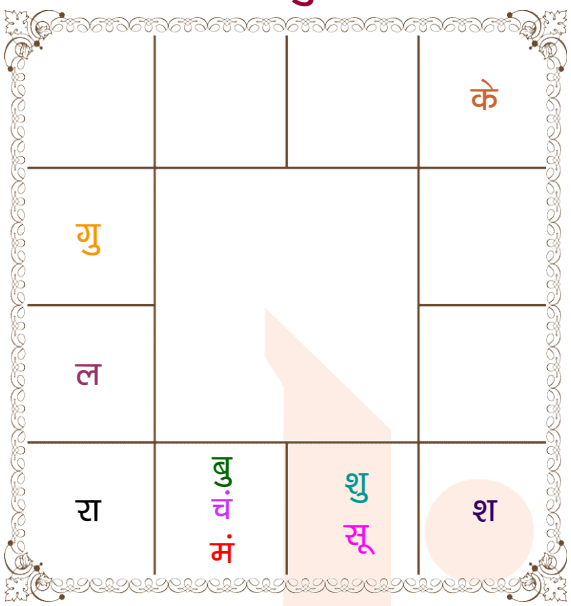

लग्न कुंडली

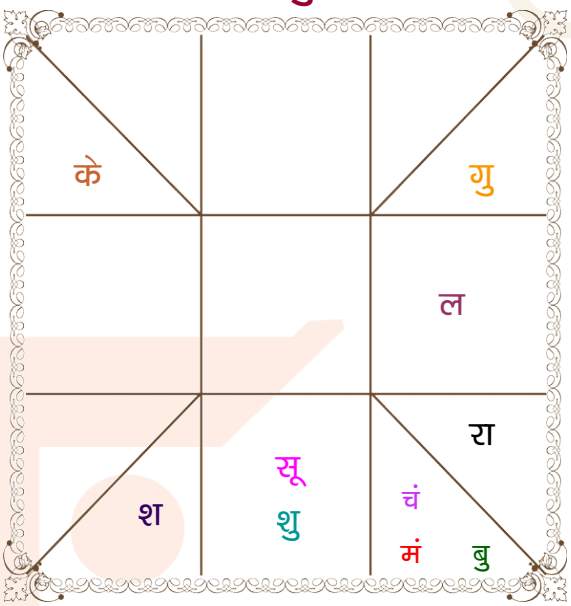

विंशोत्तरी
बुध 14वर्ष 5मा 7दि

बुध

08/11/2010

17/04/2128

बुध	17/04/2025
केतु	16/04/2032
शुक्र	16/04/2052
सूर्य	17/04/2058
चन्द्र	16/04/2068
मंगल	17/04/2075
राहु	17/04/2093
गुरु	18/04/2109
शनि	17/04/2128

योगिनी
भद्रिका 4वर्ष 2मा 29दि

सिद्धा

06/02/2021

06/02/2028

सिद्धा	18/06/2022
संकटा	07/01/2024
मंगला	18/03/2024
पिंगला	07/08/2024
धान्या	08/03/2025
भ्रामरी	17/12/2025
भद्रिका	07/12/2026
उल्का	06/02/2028

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	10:37:24	406:03:24	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	---
सूर्य			तुला	21:43:53	01:00:15	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	नीच राशि
चंद्र			वृश्चि	18:40:33	13:37:39	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	केतु	नीच राशि
मंगल			वृश्चि	13:55:21	00:43:41	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	स्वराशि
बुध		अ	वृश्चि	04:54:33	01:30:17	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	सम राशि
गुरु	व		कुंभ	29:40:09	00:02:09	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	चंद्र	सम राशि
शुक्र	व		तुला	05:55:38	00:25:09	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	मूलत्रिकोण
शनि			कन्या	18:16:45	00:06:35	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	मित्र राशि
राहु	व		धनु	09:37:12	00:02:59	मूल	3	19	गुरु	केतु	शनि	नीच राशि
केतु	व		मिथु	09:37:12	00:02:59	आर्द्रा	1	6	बुध	राहु	गुरु	नीच राशि
हर्ष	व		मीन	02:58:42	00:01:20	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	---
नेप			कुंभ	01:54:04	00:00:02	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	केतु	---
प्लूटो			धनु	09:32:28	00:01:35	मूल	3	19	गुरु	केतु	शनि	---
दशम भाव			तुला	25:29:03	--	विशाखा	--	16	शुक्र	गुरु	बुध	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:00:47

लग्न-चलित

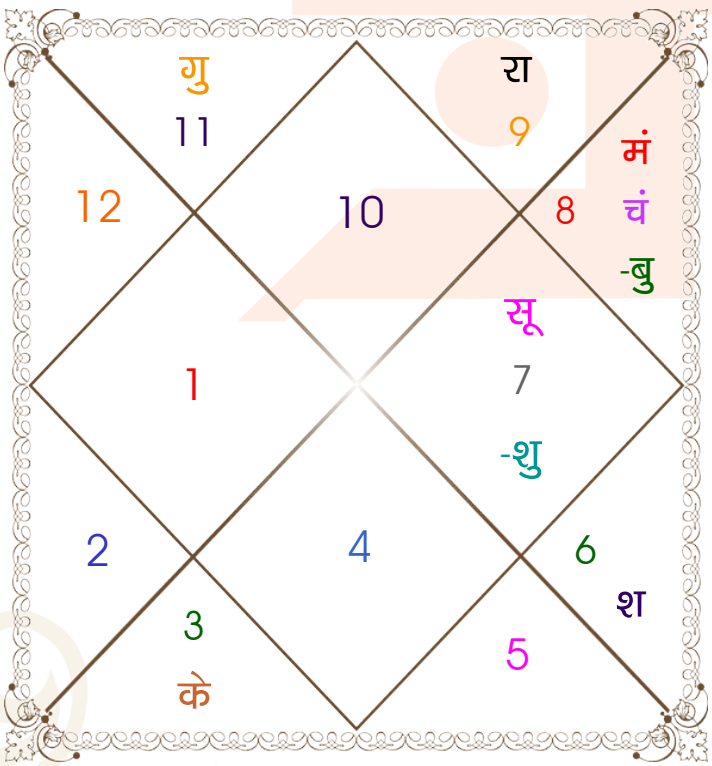

चन्द्र कुंडली

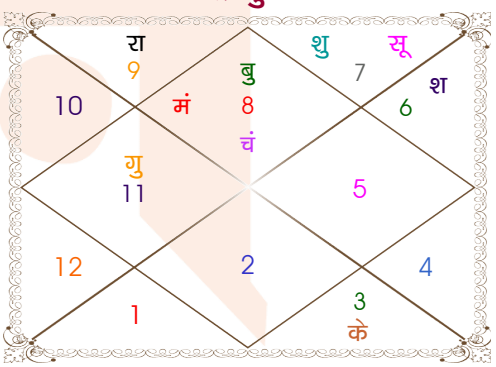

नवमांश कुंडली

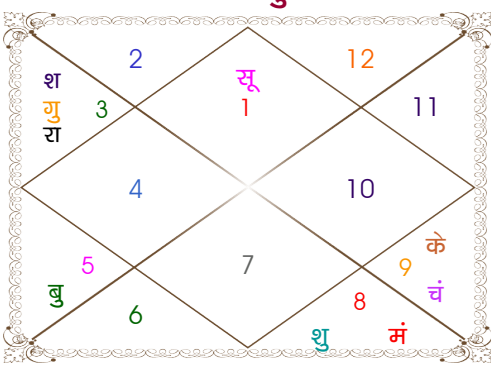

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	धनु	28:06:01	मकर	10:37:24
2	मकर	28:06:01	कुम्भ	15:34:37
3	मीन	03:03:14	मीन	20:31:50
4	मेष	08:00:26	मेष	25:29:03
5	वृष	08:00:26	वृष	20:31:50
6	मिथुन	03:03:14	मिथुन	15:34:37
7	मिथुन	28:06:01	कर्क	10:37:24
8	कर्क	28:06:01	सिंह	15:34:37
9	कन्या	03:03:14	कन्या	20:31:50
10	तुला	08:00:26	तुला	25:29:03
11	वृश्चिक	08:00:26	वृश्चिक	20:31:50
12	धनु	03:03:14	धनु	15:34:37

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	10:37:24
2	कुम्भ	19:33:29
3	मीन	25:52:45
4	मेष	25:29:03
5	वृष	20:20:08
6	मिथुन	13:59:41
7	कर्क	10:37:24
8	सिंह	19:33:29
9	कन्या	25:52:45
10	तुला	25:29:03
11	वृश्चिक	20:20:08
12	धनु	13:59:41

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा

चलित कुंडली

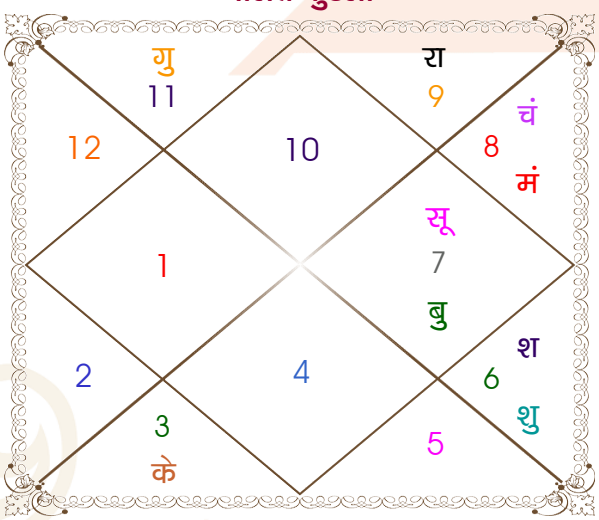

भाव कुंडली

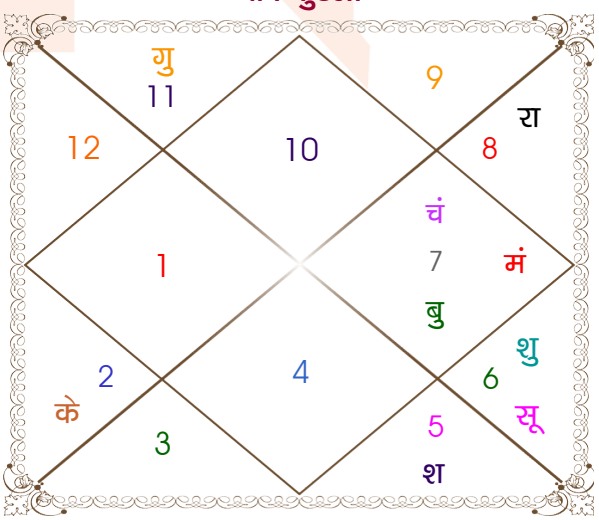

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 14 वर्ष 5 मास 7 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
08/11/2010		17/04/2025		16/04/2032		16/04/2052		17/04/2058	
17/04/2025		16/04/2032		16/04/2052		17/04/2058		16/04/2068	
	08/11/2010	केतु	13/09/2025	शुक्र	17/08/2035	सूर्य	04/08/2052	चंद्र	15/02/2059
केतु	10/09/2011	शुक्र	13/11/2026	सूर्य	16/08/2036	चंद्र	03/02/2053	मंगल	16/09/2059
शुक्र	11/07/2014	सूर्य	21/03/2027	चंद्र	17/04/2038	मंगल	10/06/2053	राहु	17/03/2061
सूर्य	18/05/2015	चंद्र	20/10/2027	मंगल	17/06/2039	राहु	05/05/2054	गुरु	17/07/2062
चंद्र	16/10/2016	मंगल	17/03/2028	राहु	17/06/2042	गुरु	21/02/2055	शनि	15/02/2064
मंगल	13/10/2017	राहु	04/04/2029	गुरु	15/02/2045	शनि	03/02/2056	बुध	17/07/2065
राहु	02/05/2020	गुरु	11/03/2030	शनि	16/04/2048	बुध	10/12/2056	केतु	15/02/2066
गुरु	07/08/2022	शनि	20/04/2031	बुध	15/02/2051	केतु	17/04/2057	शुक्र	17/10/2067
शनि	17/04/2025	बुध	16/04/2032	केतु	16/04/2052	शुक्र	17/04/2058	सूर्य	16/04/2068

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
16/04/2068		17/04/2075		17/04/2093		18/04/2109		17/04/2128	
17/04/2075		17/04/2093		18/04/2109		17/04/2128		00/00/0000	
मंगल	13/09/2068	राहु	28/12/2077	गुरु	05/06/2095	शनि	20/04/2112	बुध	14/09/2130
राहु	01/10/2069	गुरु	23/05/2080	शनि	16/12/2097	बुध	30/12/2114	केतु	09/11/2130
गुरु	07/09/2070	शनि	30/03/2083	बुध	24/03/2100	केतु	07/02/2116		00/00/0000
शनि	17/10/2071	बुध	16/10/2085	केतु	28/02/2101	शुक्र	09/04/2119		00/00/0000
बुध	13/10/2072	केतु	04/11/2086	शुक्र	30/10/2103	सूर्य	21/03/2120		00/00/0000
केतु	11/03/2073	शुक्र	04/11/2089	सूर्य	17/08/2104	चंद्र	20/10/2121		00/00/0000
शुक्र	11/05/2074	सूर्य	28/09/2090	चंद्र	17/12/2105	मंगल	29/11/2122		00/00/0000
सूर्य	16/09/2074	चंद्र	29/03/2092	मंगल	23/11/2106	राहु	05/10/2125		00/00/0000
चंद्र	17/04/2075	मंगल	17/04/2093	राहु	18/04/2109	गुरु	17/04/2128		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 14 वर्ष 5 मा 20 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
13/09/2025		13/11/2026		21/03/2027		20/10/2027		17/03/2028	
13/11/2026		21/03/2027		20/10/2027		17/03/2028		04/04/2029	
शुक्र	23/11/2025	सूर्य	19/11/2026	चंद्र	07/04/2027	मंगल	28/10/2027	राहु	13/05/2028
सूर्य	14/12/2025	चंद्र	30/11/2026	मंगल	20/04/2027	राहु	20/11/2027	गुरु	04/07/2028
चंद्र	19/01/2026	मंगल	07/12/2026	राहु	22/05/2027	गुरु	10/12/2027	शनि	02/09/2028
मंगल	12/02/2026	राहु	27/12/2026	गुरु	19/06/2027	शनि	02/01/2028	बुध	27/10/2028
राहु	17/04/2026	गुरु	13/01/2027	शनि	23/07/2027	बुध	23/01/2028	केतु	18/11/2028
गुरु	13/06/2026	शनि	02/02/2027	बुध	22/08/2027	केतु	01/02/2028	शुक्र	21/01/2029
शनि	20/08/2026	बुध	20/02/2027	केतु	04/09/2027	शुक्र	26/02/2028	सूर्य	09/02/2029
बुध	19/10/2026	केतु	27/02/2027	शुक्र	09/10/2027	सूर्य	05/03/2028	चंद्र	13/03/2029
केतु	13/11/2026	शुक्र	21/03/2027	सूर्य	20/10/2027	चंद्र	17/03/2028	मंगल	04/04/2029

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
04/04/2029		11/03/2030		20/04/2031		16/04/2032		17/08/2035	
11/03/2030		20/04/2031		16/04/2032		17/08/2035		16/08/2036	
गुरु	20/05/2029	शनि	14/05/2030	बुध	10/06/2031	शुक्र	05/11/2032	सूर्य	04/09/2035
शनि	13/07/2029	बुध	11/07/2030	केतु	02/07/2031	सूर्य	05/01/2033	चंद्र	05/10/2035
बुध	30/08/2029	केतु	03/08/2030	शुक्र	31/08/2031	चंद्र	17/04/2033	मंगल	26/10/2035
केतु	19/09/2029	शुक्र	10/10/2030	सूर्य	18/09/2031	मंगल	27/06/2033	राहु	20/12/2035
शुक्र	15/11/2029	सूर्य	30/10/2030	चंद्र	18/10/2031	राहु	26/12/2033	गुरु	06/02/2036
सूर्य	02/12/2029	चंद्र	03/12/2030	मंगल	08/11/2031	गुरु	07/06/2034	शनि	04/04/2036
चंद्र	30/12/2029	मंगल	26/12/2030	राहु	02/01/2032	शनि	16/12/2034	बुध	26/05/2036
मंगल	19/01/2030	राहु	25/02/2031	गुरु	19/02/2032	बुध	07/06/2035	केतु	16/06/2036
राहु	11/03/2030	गुरु	20/04/2031	शनि	16/04/2032	केतु	17/08/2035	शुक्र	16/08/2036

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
16/08/2036		17/04/2038		17/06/2039		17/06/2042		15/02/2045	
17/04/2038		17/06/2039		17/06/2042		15/02/2045		16/04/2048	
चंद्र	06/10/2036	मंगल	12/05/2038	राहु	28/11/2039	गुरु	25/10/2042	शनि	17/08/2045
मंगल	10/11/2036	राहु	15/07/2038	गुरु	22/04/2040	शनि	28/03/2043	बुध	28/01/2046
राहु	10/02/2037	गुरु	09/09/2038	शनि	13/10/2040	बुध	13/08/2043	केतु	05/04/2046
गुरु	02/05/2037	शनि	16/11/2038	बुध	17/03/2041	केतु	09/10/2043	शुक्र	15/10/2046
शनि	06/08/2037	बुध	15/01/2039	केतु	20/05/2041	शुक्र	19/03/2044	सूर्य	12/12/2046
बुध	31/10/2037	केतु	09/02/2039	शुक्र	19/11/2041	सूर्य	07/05/2044	चंद्र	18/03/2047
केतु	06/12/2037	शुक्र	21/04/2039	सूर्य	13/01/2042	चंद्र	27/07/2044	मंगल	25/05/2047
शुक्र	17/03/2038	सूर्य	12/05/2039	चंद्र	14/04/2042	मंगल	22/09/2044	राहु	14/11/2047
सूर्य	17/04/2038	चंद्र	17/06/2039	मंगल	17/06/2042	राहु	15/02/2045	गुरु	16/04/2048

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 2, 8, 4
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	100%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
नीलम	शनि	100%	भाग्योदय, स्वास्थ्य, धन
पन्ना	बुध	72%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	67%	धनार्जन, सुख
मोती	चंद्र	47%	हानि, दाम्पत्य कष्ट
गोमेद	राहु	25%	व्यय, धन हानि
लहसुनिया	केतु	25%	शत्रु व रोग, हानि
पुखराज	गुरु	19%	धन हानि, व्यय, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	6%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना

रत्न की शुभता

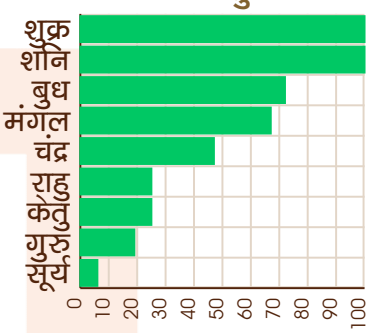

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	17/04/2025	19%	22%	67%	84%	19%	100%	100%	25%	25%
केतु	16/04/2032	0%	22%	73%	72%	19%	100%	92%	0%	50%
शुक्र	16/04/2052	0%	22%	67%	78%	19%	100%	100%	38%	38%
सूर्य	17/04/2058	31%	55%	73%	72%	31%	93%	92%	0%	0%
चंद्र	16/04/2068	19%	61%	67%	78%	19%	100%	100%	0%	0%
मंगल	17/04/2075	19%	55%	79%	59%	31%	100%	100%	0%	38%
राहु	17/04/2093	0%	22%	54%	72%	19%	100%	100%	50%	0%
गुरु	18/04/2109	19%	55%	73%	59%	44%	93%	100%	25%	25%
शनि	17/04/2128	0%	22%	54%	78%	19%	100%	100%	38%	0%

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढेसाती तृतीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	अल्प बचत
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	कम खर्च
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल चन्द्रमा के साथ है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु चन्द्र लग्न से मंगल का दोष अधिक नहीं माना जाता है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव उत्पन्न रहेगा। साथ ही मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित मात्रा में विलम्ब भी हो सकता है तथा यदा कदा विवाह संबंधी वार्तालापों में व्यवधान आएंगे परन्तु अन्ततोगत्वा आपको सफलता मिलेगी। पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही चतुर्थ भाव पर दृष्टि के कारण जीवन में आप भौतिक सुख संसाधन तथा जायदाद आदि भी प्राप्त करेंगे यद्यपि इसमें आपको थोड़ा परिश्रम अवश्य करना पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वभाव से वे तेज हो सकती है परन्तु इसमें कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा व्यवधानों एवं समस्याओं का दृढ़ता पूर्वक सामना करके उनका समाधान करेंगे।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय एवं अनुकूल बनाने के लिए आपको किसी उचित मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाय। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा इच्छित भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी साथ ही चल एवं अचल सम्पति के भी स्वामी बनेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय एवं प्रसन्नता पूर्वक

व्यतीत होगा तथा धनऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगे।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शेषनाग नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के शरीर में रोग व्याधि कभी लग जाती है, जिसमें नेत्र रोग, उदर रोग, अनिद्रा आदि सम्मिलित हैं। मानसिक उद्विग्नता के कारण दिल और दिमाग थोड़ा बहुत परेशान रहता है और शारीरिक सुख का प्रायः अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक को अपने जन्मस्थान व देश से दूर रहना पड़ता है और बेवजह अनेक शत्रु हो जाते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में प्रायः सफल नहीं होते। झगड़ा-झंझट, वाद-विवाद में जातक को हार का सामना करना पड़ता है। जातक को न्यायालय से प्रायः नुकसान ही उठाना पड़ता है। जातक को अपनी जिन्दगी में समय-समय पर बदनाम होने का भय बना रहता है। काम बनते-बनते रह जाते हैं। काम करने का ढंग निराला होता है। कामों को सफल करने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है, पर सफलता संदिग्ध रहती है।

इसके प्रभाव से आमदनी से अधिक व्यय होने के कारण आर्थिक संकट घेर लेते हैं। जातक के प्रायः अनेक कर्जदार हो जाते हैं। कर्जा उतारने हेतु किए गए प्रयासों में सफलता मिलती है पर थोड़ा बहुत नुकसान भी उठाना पड़ता है। मनोनुकूल काम पूरा होने में थोड़ा विलम्ब होता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है और सामाजिक मान-सम्मान भी मिलता है। जीवन के अन्त में या मरणोपरान्त इनका नाम प्रसिद्ध होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में बुध के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

नवम भाव मे शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्त्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

बारहवें भाव में राहु हो तो जातक विवेकहीन, कामी, चिन्ताशील, अतिव्ययी, सेवक, परिश्रमी, मूर्ख एवं मतिमन्द होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

षष्ठभाव में केतु हो तो जातक वात विकारी, झगड़ालू, अरिष्टनिवारक, सुखी, मितव्ययी, भूत प्रेतजनित रोगों से रोगी, दुर्घटना, दीर्घायु एवं धनी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com

दशा विश्लेषण

महादशा :– केतु
(17/04/2025 - 16/04/2032)

केतु की महादशा को 17/04/2025 आरम्भ और 16/04/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु छठे भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको यश और ख्याति की प्राप्ति और प्रगति हुई होगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहा होगा। केतु की वर्तमान दशा में शत्रुओं पर विजय, सौभाग्य, यश तथा अधिकार मिलेगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में किसी बीमारी से लड़ने की क्षमता होगी। आपको छूत की बीमारी, बुखार, अल्सर, चर्मरोग, घाव और मूत्राशय में पीड़ा हो सकती है। कुछ सावधानी बरतकर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। आपको अपने विरोधियों से लाभ मिलेगा। ननिहाल पक्ष से लाभ मिल सकता है। सट्टे तथा अन्य निवेश से लाभ होगा। केस-मुकदमे में निर्णय आपके पक्ष में होंगे। जीविका-व्यवसाय के लिए भाषा, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक, शरीर-विज्ञान, प्रौद्योगिकी, ज्योतिष, परा-चिकित्सा सेवा अथवा समाज सेवा के क्षेत्र का अध्ययन कर सकते हैं। चिकित्सा उपकरण, द्रव इंजीनियरी, लोहा-इस्पात, दवा, रेडियो के पुर्जे, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक के पुर्जे, रत्न, खनिज आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में माहौल अनुकूल रहेगा। आपको सहयोगियों-सहकर्मियों से सहयोग और वरिष्ठ कर्मचारियों से सदभाव मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को कार्य में सफलता, अच्छी आय और लाभ होगा। कार्य के सिलसिले में आपकी यात्रा हो सकती है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको आराम मिलेगा। आप गाड़ी बदल सकते हैं या नयी गाड़ी ले सकते हैं। आप जमीन-जायदाद की खरीद या बिक्री कर सकते हैं। आवास में परिवर्तन हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और सूर्य की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

शिक्षा उत्तम होगी और आप प्रतियोगिताओं और परीक्षाओं में अच्छा करेंगे। तकनीकी विषयों में आपकी रुचि होगी। कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग, भाषा, भौतिक शास्त्र, वायु-सैनिक के कार्य, दवा, विज्ञान, तत्त्वमीमांसा, प्रसारण, गुप्त विद्या तथा अन्य विषय आदि में भी आपकी रुचि हो सकती है। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे और सभी परीक्षाओं प्रतियोगिताओं में सफल होंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को लाभ तथा समृद्धि मिलेगी। आपके जीवन साथी को कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी, अनावश्यक खर्च होगा तथा व्यर्थ की यात्रा होगी। आपकी माता के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा, छोटी यात्रा होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि पिता को यश, ख्याति और अधिकार प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि, उत्तम शिक्षा तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी जबकि बड़ों के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ तथा हानि होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान विरोधियों पर विजय मिलेगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मंगल की अन्तर्दशा में सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में लोकप्रियता मिलेगी और विभिन्न स्रोतों से लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा तथा स्वास्थ्य-समस्या होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा तथा विवाह होगा। शनि के कारण बच्चों से सुख और विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि बुध की अन्तर्दशा में यश और ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति तथा कार्यों में सफलता मिलेगी।

अंर्तदशा :- केतु - शुक्र
(13/09/2025 - 13/11/2026)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी ।

इस अवधि में आप लोकप्रिय और सफल रहेंगे। प्रसिद्धि, सम्मान और धन का योग है। आय अच्छी होगी, जीवन उच्च स्तर का होगा। धनी बनेंगे। तीर्थयात्रा हो सकती है। आपके नये मित्र बनेंगे जो लाभकारी होंगे। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। समाज में अच्छी साख होगी। अचल संपत्ति और वाहन क्रय कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता का पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए कुछ परिवर्तन, धन, समृद्धि, यात्रा और विलास सामग्री की प्राप्ति का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय प्राप्त होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, मामापक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो समय बहुत शुभ रहेगा, उच्चपद मिल सकता है। परामर्शदाता प्रसिद्ध होंगे, उनकी आय अच्छी होगी। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा, उनकी आय उत्तम होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए चावल, सफेद चंदन, दही और सफेद वस्त्र दान में दें।

अंर्तदशा :- केतु - सूर्य
(13/11/2026 - 21/03/2027)

आपके लिए केतु महादशा 17/04/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 13/11/2026 को प्रारंभ होकर 21/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। तीर्थयात्रा कर सकते हैं; अध्यात्म में रुचि होगी। नेकी के कार्य करेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, वाहन सुख रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी, बहुत से मित्र होंगे। विरासत में जायदाद मिल सकती है। घरेलू सुख रहेगा; माता से उत्तम संबंध रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता धनी बनेंगे, इच्छाएं पूर्ण होंगी। माता को साझेदार के माध्यम से लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए अचानक लाभ, खर्चे, यात्रा और शत्रुओं पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान के सम्मान में वृद्धि होगी, उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, उच्चपद प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी। परामर्शदाता सफल रहेंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- केतु - चन्द्र
(21/03/2027 - 20/10/2027)

आपके लिए केतु महादशा 17/04/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 21/03/2027 से प्रारंभ होकर 20/10/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और धनी बनेंगे। धनार्जन उत्तम होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे। बड़े भाई-बहनों और चाचाओं से उत्तम संबंध रहेंगे। धन का संचय होगा। निवेश से लाभ हो सकता है। कला और खेलों में रुचि हो सकती है। दूसरों की भलाई के काम करेंगे।

आपके जीवनसाथी को सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। आपके पिता को संचार माध्यम से लाभ संभव है। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं, अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, समृद्धि, समाज में सफलता और लोकप्रियता का संकेत है। आपकी संतान अगर कार्यरत है तो यात्रा हो सकती है; व्यापार से लाभ होगा। अगर आप सेवारत हैं तो आपके कुछ स्पर्धी हो सकते हैं; कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं की आय उत्तम होगी। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए भैरवजी की उपासना दूध से करें।

अंर्तदशा :- केतु - मंगल
(20/10/2027 - 17/03/2028)

आपके लिए केतु की महादशा 17/04/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 20/10/2027 को प्रारंभ होकर 17/03/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपका धनागम उत्तम होगा; कार्यों में सफलता मिलेगी। साहस और मनोबल उत्तम होंगे। आपका प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। बहुत से हितकारी मित्र होंगे। भाई-बहनों और चाचा से उत्तम संबंध होंगे। निवेश से लाभ होगा। संतान से सुख मिलेगा या संतान का जन्म हो सकता है। रोग निरोधक क्षमता उत्तम होगी; शत्रुओं पर विजय मिलेगी।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली और धनी होंगे। आपके पिता साहसी और उत्साही होंगे। माता के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकता है, अचानक लाभ हो सकता है।

आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, धन, सक्रिय जीवन और प्रसिद्धि का संकेत है। आपकी संतान को साझेदारी से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, व्यापार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मसूर की दाल, चंदन और लाल वस्त्र दान में दें।

अंर्तदशा :- केतु - राहु
(17/03/2028 - 04/04/2029)

आपके लिए केतु महादशा 17/04/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 17/03/2028 को प्रारंभ होकर 04/04/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। विदेश यात्रा हो सकती है। नयी मित्रता लाभकारी हो सकती है। व्यापार में उन्नति होगी। कार्यों में प्रारंभ में बाधाएं आ सकती हैं। शत्रुओं पर विजय होगी, चिंताएं खत्म होंगी, कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। नौकरी में या मातहतों के माध्यम से लाभ होगा। खेलकूद आदि में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी का कार्यालय उत्तम होगा; सब का सहयोग प्राप्त होगा। आपके पिता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं; घरेलू सुख रहेगा। माता भाग्यशाली और धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए प्रसिद्धि, धनलाभ, धनसंचय, सुखी पारिवारिक जीवन का संकेत है।

आपकी संतान को अचानक लाभ हो सकता है या परिवर्तन आ सकता है। उन्हें सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला या अन्य परिवर्तन संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से लाभ होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे, उत्साह उत्तम रहेगा। व्यापारी स्पर्धियों पर सफलता प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द, सतनजा और नीले वस्त्र दान करें।

अंर्तदशा :- केतु - गुरु
(04/04/2029 - 11/03/2030)

आपके लिए केतु महादशा 17/04/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 04/04/2029 को प्रारंभ होकर 11/03/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। उत्तम वस्त्र और भोजन का सुख मिलेगा। स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप धनी बनेंगे, सरकार से लाभ होगा, सुख-साधन उपलब्ध होंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी। अधीनस्थ कर्मचारियों और किरायेदारों से लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम होगा। अच्छी नौकरी मिल सकती है, प्रसिद्ध हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। आपके पिता को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी, मातहतों से लाभ हो सकता है। माता भाग्यशाली रहेंगी, धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, प्रगति में बाधा, प्रसन्न जीवन का संकेत है।

आपकी संतान सफलता प्राप्त करेगी; उनके प्रभावशाली मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा; सफल और धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, आय अच्छी होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। खानपान में संयम बरतना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- केतु - शनि
(11/03/2030 - 20/04/2031)

आपके लिए केतु महादशा 17/04/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 11/03/2030 को प्रारंभ होकर 20/04/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आप भाग्यशाली और धनी बनेंगे। धनार्जन उत्तम होगा, यात्राएं होंगी। उच्चशिक्षा में सफलता मिलेगी। छोटे भाई-बहन सुखकारी होंगे। आपका खेती से कोई संबंध हो सकता है। निवेश से लाभ होगा। शत्रुओं पर विजय होगी; अधीनस्थ कर्मचारी सहयोग करेंगे। मामा पक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता के सब काम बन जाएंगे। माता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, उनका कार्यालय उत्तम होगा। आपके भाई-बहनों

के लिए साझेदारी से लाभ, आय में वृद्धि और प्रभावशाली मित्रों का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी, धनी बनेंगे और निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो साख बढ़ेगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

आचार्य उज्ज्वल कृष्ण शास्त्री जी
श्री धाम अयोध्या जी (सारंगापुर)
7906311562 , 7388947439
Ujjwalkrishna7388@gmail.com